Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

सूफी गायिका रेशमा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

DR. KAPIL DEV
Music Instroctor, GMSSSS Babain, Ladwa-Sahabad Road, Babain Kurukshetra, Haryana

शोध सार: *प्रतिभा जब जन्म लेती है तो वह यह नहीं देखती कि वह किस जाती, धर्म, क्षेत्र, समुदाए, संस्कृति, रंग, एवं लिंग के रूप आदि में पैदा हो जाती हैं बस उसको एक विशेष सुनिश्चित समय पर केवल जन्म लेना होता है। क्योंकि प्रतिभा का गुण प्रकृति प्रगत है वह कालान्तर में उपवन में खिले सुगन्धित पुष्प् की तरह अपनी खुशबू बिखेर ही देती है। प्रतिभा तमाम अवधारणों, विकारों, गतिरोधों एवं प्रतिरोधों से मुक्त होती है। ऐसी ही एक महान प्रतिभा जिन्होंने गायन के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का विश्व पटल पर लोहा मनवाया तथा अपनी परम्परा का नाम रोशन किया।*

मुख्य शब्द: *संगीत, संस्कृति, सूफी, गायिका, अन्तराष्ट्रीय, चित्रपट, सुगम।*

जन्म एवं जन्म स्थान

लोकप्रिय गायिका रेशमा का जन्म राजस्थान राज्य की रतनगढ़ तहसील के लोहा गाँव में लगभग 1947 में एक बंजारों के परिवार में हुआ। वह एक बंजारा जनजाति से थी परन्तु उनके पिता इस्लाम-धर्म में परिवर्तित हो गए थे। उनकी बंजारा जनजाति भारत के विभाजन के तुरंत बाद कराची चली गई। भारत विभाजन के कुछ समय बाद ही उनका परिवार पाकिस्तान में जा बसा। उनका कहना है कि शास्त्रीय संगीत में उनको कोई शिक्षा हासिल नही हुई। रेशमा ने एक साक्षात्मकार में बताया है कि मेरा जन्म बीकानेर राजस्थान के पास एक कस्बे में एक सौदागरों के परिवार में हुआ। जन्म का साल तो मुझे मालूम नहीं लेकिन मुझे बताया गया कि जब मुझे 1947 में पाकिस्तान लाया गया तो मेरी उम्र चंद महीने की ही थी। मेरे परिवार वाले बीकानेर से ऊँट ले जाकर और जगहों पर बेचते थे और वहां से गाय बकरियां वापस लाकर घर के पास बेचते थे। मैं बंजारों के एक बड़े कबीले से हूं और मेरा परिवार हमेशा इधर से उधर सफर ही करता रहता था। हम में से अब कई लाहौर और करांची में बस गए है। लेकिन अब भी हमें वो सफर याद आता है हम बोरियां-बिस्तर बांधके चल देते थे। रेशमा अनपढ़ थी और अनौपचारिक तरीके से बोलती थी। उन्होंने हमेशा भारत-पाकिस्तान मित्रता को बढ़ाने की बात की थी। रेशमा ने सुश्री इन्दिरा गांधी के सामने भी गया था। रेशमा ठेठ पंजाबी बोलती थी। 1947 के विभाजन के बाद जनवरी 2006 में जब पंजाब के दोनों हिस्सों के बीच लाहौर-अमृतसर बस पहली बार चली तो सबसे पहली बस पर 26 यात्री थे, जिसमें से 19 पाकिस्तान सरकार के अफसर थे। बाकी यात्रियों में से 7 रेशमा और उनके परिवारजन थे।

संगीत की शुरूआत

रेशमा जी की शास्त्रीय संगीत की शिक्षा न होने के बावजूद भी कई गाने प्रसिद्ध हुए है। बंजारा परिवार में जन्म होने के कारण संगीत का असर कहीं न कहीं उनके आस-पास रहा। बचपन में ही उनकी संगीत के प्रति रूचि बढ़ने लगी व उन्होंने गुनगुनाना शुरू किया। पाकिस्तान में जब शुरूआती दिनों में रेशमा ने रेडियों पर गाना गया उनके कुछ प्रारम्भिक गीत थे दमादम मस्त कलंदर, हाय ओ रब्बा, नहियो लगदा दिल मेरा, सुन चरखे दी मिट्ठी-मिठ्ठी कूक आदि। इन गीतों को लोगों के द्वारा बहुत प्यार मिला और पाकिस्तान के रेडियों पर गाकर मशहूर हुई रेशमा की आवाज को सरहदे भी नही रोक पाई। उनकी आवाज को पाकिस्तान से भी अधिक भारत में लोकप्रियता मिली और इसी के चलते रेशमा जी को बालीवुड में गाने का अवसर मिला। आज भी हीरों फिल्म का गाना 'लम्बी जुदाई' रेशमा जी की पहचान बना हुआ है। रेशमा जी ने 12 वर्ष की आयु में गाना शुरू कर दिया था और सर्वप्रथम पाकिस्तान में 'लाल मेरी पत' गीत रिकार्ड किया था।

प्रसिद्ध गायिका व्यक्तित्व एवं कृतित्व

लोक स्वर ऐसा जिसे सुनते हुए राजस्थान के रेगिस्तान की खुरदराहट और बाजारों की रंगों में दौडती मस्ती पूरी शिद्दत से महसूस होती थी। अधिकतर भारतीय, रेशमा को फिल्म हीरो के 'लम्बी जुदाई गीत से जानते है लेकिन रेशमा जी ने जब-जब और जो भी गाया वह पूरे दिल से गया। इनकी गायकी में मन्द्र सप्तक से लेकर तार सप्तक तक ऐसा जुड़ाव नजर आता है कि कहीं पर भी कोई टूटन देखने को नहीं मिलती। 'हाय ओ रब्बा' नइयो लगदा दिल मेरा' जैसा गीत गाकर वह हमारे अन्दर छिपी हुई शाश्वत उदासी को धीरे-धीरे जगाते हुए मंझे हुए मनोवैज्ञानिक की तरह बाहर ले आती है। लागों में एक किस्सा आज भी याद किया जाता है कि पाकिस्तान के ही मशहूर गायक रहे और

मेंहदी हसन के शिष्य, परवेज मेंहदी के साथ गाया उनका गाना, 'गोरिए--मैं जाना परदेश'' में किस तरह रेशमा की सुरीली हूंक परवेज की हरकतों और मुर्कियों पर भारी पड़ी थी। उनकी जवानी से लेकर बुढ़ापे के दौर तक में उनके साक्षात्कारों में एक साफ और अविरल विचार प्रवाह हमेशा नजर आया। उर्दू और पंजाबी के मिश्रण में बात करते हुए उन्होंने कभी नहीं छुपाया कि वो पढ़ी-लिखी नहीं है और भाषा पर उनका कोई अधिकार नहीं है और न ही रेशमा जी ने कभी ऐसा व्यक्तित्व पेश किया। साक्षात्कार लेने वालों को वह कभी बाबू साहब, कभी बाबू तो कभी बेटा कहकर ही संबोधित करती थी। भारत का जिक्र आते ही वह उस सम्मान के विषय में जरूर बात करती थी जो उन्हें यहां मिला। स्टूडियों में जाने से घबराने वाली रेशमा जी के अनुरोध पर लम्बी जुदाई गाना 'दीलीप कुमार' के घर पर रिकार्ड हुआ था। वे उन चंद पाकिस्तानी कलाकारों में थी जिनहें पाकिस्तान ने समझा और कद्र की थी। हालांकि यह कहना बहुत रवायती होगा, लेकिन सच यही है कि सांस्कृतिक संदर्भों में रेशमा भारत और पाकिस्तान के बीच एक पुल की तरह थी।

रेशमा की मखमली व मुलायम खनकती आवाज जब फिज़ा में गूंजती थी तो थार मरूस्थल का ज़र्रा-ज़र्रा कुन्दन सा चमकने लगता। वे राजस्थान के शेखावटी अंचल के एक गांव में पैदा हुई थी लेकिन उनका गायन कभी सरहद की हदों में नहीं बंधा। रेशमा को जब भी मौका मिला वो राजस्थान आती रही और सुरों को अपनी सर जमीं पर न्यौछावर करती रही लोगों को याद है जब रेशमा को वर्ष 2000 में सरकार ने दावत दी और वो खिंची चली आई तब उन्होंने जयपुर में खुले मंच से अपनी प्रस्तुति दी और फिज़ा में अपने गायन का जादू बिखेरा। रेशमा ने अपना पसन्दीदा 'केसरिया बालम पधारों म्हारे देश' सुनाया बल्कि 'लम्बी जुदाई' सुनाकर सुनने वालों को सम्मोहित कर दिया था। इस कार्यक्रम के आयोजन से जुड़े अजय चैपड़ा ने उन लम्हों को याद कर बताया कि जब रेशमा को दावत दी गई तो वो कनाड़ा जाने वाली थी और कहने लगी उन्हें वीसा मिल गया है। मगर जब उनको अपनी माटी का वास्ता दिया गया तो रेशमा भावुक हो गई, और ठेठ देशी मारवाडी में बोली अगर माटी बुलाव तो बताओ फेर में किया रूक सकू हूं।

ये ऐसा मोका था जब राजस्थान की माटी में पैदा पंडित जसराज, जगजीत सिंह, मेंहदी हसन और रेशमा जयपुर में जमा हुए और प्रस्तुति दी होटल में रेशमा ने राजस्थानी ठंडई की ख्वाहिश ज़ाहिर की तो ठंडई का सामान मंगाया गया और रेशमां ने खुद अपने हाथ से ठंडई बनाई। रेशमा अपने गांव माटी और लोगों को याद कर बार-बार जज़्बाती हो जाती थी। रेशमा ने मंच पर कई बार अपने गांव देहात और बीते हुए दौर को याद किया और उन रिश्तों को अमिट बताया।

प्रसिद्ध गीतः रेशमा 12 साल (वर्ष) की उम्र में एक बार शाहबाज कलंदर की दरगाह पर गाती हुई दिखी। रेशमा पर टीवी और रेडियों के एक प्रोडयूसर की नजर पड़ी। उन्होंने पाकिस्तान रेड़ियों पर 'लाल मेरी' की रिकार्डिंग का इन्जाम किया। रेशमा की यह रिकार्डिंग बडी हिट रही। वह 1960 के दशक से ही पाकिस्तान के टीवी पर गाने लगी। उनकी आवाज में दमादम मस्त कलन्दर', हाय ओ रब्बा नइयों लगदा दिल मेरा' और अंखिया नू रैण दे, जैसे गाने लोगों की जुबान पर चढ गए। राजकपूर ने तो फिल्म 'बाबी' में 'अखियां नू रहण दे' की तर्ज का इस्तेमाल करते हुए लता मंगेशकर से 'अंखियो' को रहने दे, अंखियों के आस-पास' गाना भी गवाया। रेशमा के प्रसिद्ध गीतों की सूची में ये 12 गीत अधिक प्रसिद्ध रहे है।

1. बिछड़े अभी तो हम बस कल परसों
2. हायों रब्बा नइयो लगदा दिल मेरा
3. औंदिया नसीबां नाले ए घडियां
4. इक तैनू मंगेया इ रब्बा कोलो, कोई होर दुआ मंगेया नइ
5. किते नैन ना जोडी
6. वे मैं चोरी चोरी तेरे नाल ला लेय्यां अक्खां (अक्खां)

7. साड्डे वल मुखड़ा मोड़, वे प्यारेया साड्डे वल मुखडा मोड

8. अंखिया नू रैण दे, अखियां दे कौल-कौल

9. केसरिया बालम आवो नी

10. तू मिल जावें दुख मुक जांदे ने

11. लो दिल की बात आप भी हमसे छुपा गए

आर्थिक परेशानियां: एक दौर ऐसा भी आया जब रेशमा आर्थिक परेशानियों में घिर गई तथा उनके उपर कर्ज हो गया था। ऐसे में वो काफी परेशान रही तब पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति और संगीत प्रेमी परवेज मुशर्रफ ने उन्हें दस लाख रुपये दिए ताकि वह अपना ऋण चुका सके। बाद में मुशर्रफ ने रेशमा के लिए प्रति माह 10,000/- (दस हजार) रुपय की सहायता भी निर्धारित कर दी। रेशमा को जब 6 अप्रैल 2013 को लाहौर के डाक्टर्स हास्पीटल में भर्ती कराया गया था तो नजम सेठी की अगुवाई वाली तत्कालीन कार्यवाहक सरकार ने उनके चिकित्सकीय खर्च का भुगतान करने का फैसला किया था। रेशमा ने कहा था, मैं अमेरिका, कनाड़ा सहित कई देशों में गई। उसके बाद मैं भारत में गई तो वहां लोगों ने मुझे काफी सम्मान दिया।

रेशमा की प्रबल इच्छा: रेशमा खुले मन से गाती थी व उसी मन से बिन्दास जीती भी थी। मन में कुछ रखती नहीं थी पर उसकी एक प्रबल इच्छा थी कि भारतीय प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी जी से मिला जाए क्योंकि वो उनको अपना आदर्श मानती थी। रेशमा जी को यह अवसर 70 के दशक में मिला फिल्म बाबी की शूटिंग में राजकपूर को रेशमा से फिल्म में गाना गवाना था अंखिया नू रहण दें राजकपूर रेशमा की आवाज को बहुत पसन्द करते थे। रेशमा ने खुशी-खुशी राजकपूर को गाने के राइटस दे दिए बदले में राजकपूर ने इन्दिरा गांधी से रेशमा की मुलाकात तय करवा दी। वह रेशमा की जिन्दगी का सबसे सुहाना दिन था। उन्होंने कहा मैं अगले जन्म में इसी मिट्टी में जन्म लूंगी और मेरे बाबा मुझे जब यह देश (मिट्टी) छोड़ने को कहेंगे तो भी मैं यहां से नहीं जाऊंगी।

सम्मान और पुरस्कार

पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने उन्हें 'सितारा ए इम्तिहान' और 'लीजेंडस आफ पाकिस्तान सम्मान प्रदान किया था। उन्हें और भी कई सम्मान मिले थे भारत और पाकिस्तान के कलाकारों को जब 1980 के दशक में एक-दूसरे के यहां अपनी प्रस्तुति देने की अनुमति मिली, तब रेशमा ने भारत में लाइव परफार्मेंस दिया था! फिल्म निर्माता सुभाष घई ने उनकी आवाज को अपनी फिल्म 'हिरों में इस्तेमाल किया था और वह गीत लम्बी जुदाई था जो आज भी सभी की जुबां पर है। उन्हें भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से भी मिलने बुलाया गया था व सम्मान प्राप्त हुआ।

पूरी दुनिया में रेशमा की आवाज के दीवाने आज भी मौजूद है। रेशमा ने उपमहाद्वीप के लगभग हर देश का दौरा किया। उन्होंने उर्दू, सिंधी, सरायकी, पंजाबी परतो और राजस्थानी भाषाओं के साथ-साथ फारसी, तुर्की और अरबी भाषाओं में भी कई पुरस्कार मिले। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से नवाजा गया।

एक बार पाकिस्तानी टी.वी. पर पाकिस्तानी दर्शकों ने रेशमा को लेकर खूब खत लिखे जिसमें उन्होंने रेशमा से उर्दू गज़ल गवानें की सिफारिश की। पाकिस्तानी टी.वी. ने भी अपने दर्शकों का दिल रखने के लिए रेशमा से बात की, तो रेशमा ने उर्दू में गाने से मना कर दिया क्योंकि वो जिस बन्जारा समुदाय से आती थी उनकी स्वाभाविक बोली बिल्कुल उर्दू के उल्ट थी। कराची टी.वी. ने जब ग़ज़ल गाने की मिन्नते की तो रेशमा तैयार हो गई मगर परेशानी यह थी कि वह पढ़ नहीं सकती थी और उनकी बोली ठेठ पंजाबी और राजस्थानी थी जो उनके स्वभाव में थी। एक आदमी बोल-बोल कर उन्हें याद कराता था। मगर वह कई दिनों तक एक उर्दू शब्द शुगुफ्ता नहीं बोल पाई। जैसे तैसे उन्हें गाने के लिए तैयार किया गया और जब रिकार्ड का वक्त आया तो उनसे कहा गया कि रिकार्ड में आप अपना देशी पहनावा (घाघरा चोली) नहीं पहन सकते। आप गज़ल गा रही है इसलिए आपको साड़ी पहननी पड़ेगी। अब उनके सामने यहां समस्या आ गई परन्तु

कैसे भी करके, उनको साड़ी पहनाने के लिए एक औरत को बुलाया गया तब जाकर उनकी दो गज़ल रिकार्ड की जा सकी। इसके बाद रेशमा ग़ज़ल गाने से बचती थी।

इलिट क्लास की अपनी एक भाषा होती है और अपना अलग एक पहनावा होता है जिसको प्रगतिशीलता कहा जाता है उनकी नकल उससे नीचे के तबके करते है और जब नीचे का तबका इलीट क्लास का पहनावा और भाषा अपना लेता है तो इलीट क्लास उसे छोड़ देता है। पाकिस्तान और भारत में जब औरतें अपना लोकल पहनावा (बुर्का, लहंगा, कमीज, सलवार) पहनती थी तब दोनों देशों के इलीट वर्ग (रजवाड़े आदि) में साड़ी फैशन, प्रगतिशील और आधुनिकता की पहचान बताई जाती थी। जब दोनों देशों के लोग अपनी लोकल बोलियां बोलते थे तब उर्दू और हिन्दी बोलना इलीट क्लास के लिए प्रगतिशील और आधुनिक फैशन हुआ करता था। मगर जैसे ही इन्हें नीचे के वर्ग ने अपनाया तो इलीट क्लास का फैशन प्रगतिशीलता मानक स्कर्ट से लेकर बिकनी हो गया और फर्राटेदार अंग्रेजी इनकी पहचान हो गई। जिसे कुछ वर्षों में (ला क्लास) नीचे का वर्ग फिर अपना लेगा और इलीट वर्ग फिर अलग दिखने के लिए कुछ अलग करेगा।

मशहूर गायिका का निधन

गायिका रेशमा ने अपने जीवन में संगीत के क्षेत्र में अनेक मुकाम हासिल किए व सम्पूर्ण जीवन संगीत को समर्पित किया। उनको गले का कैंसर था जिसके कारण वे काफी समय कैंसर से पीडित रही तथा मृत्यु से पहले एक महीने तक हस्पताल में कोमा में उनको रखा गया था। अंततः 3 नवम्बर 2013 को ये महान गायिका इस नश्वर संसार को छोड़कर परमेश्वर की ज्योति में विलीन हो गई। वहीं पाकिस्तान में पूरे रस्मों रिवाज के साथ उनको सूपूर्द-ए-खाख किया गया।

संदर्भ

1. www.google.com/reshma
2. www.youtube.com/reshma interview
3. The Hindu Newspaper 4 November, 2013
4. Dainik Jagran, 4 November, 2013
5. Dainik Tribune, 4 November, 2013
6. The Times of India, 4 November, 2013
7. जनसत्ता समाचार पत्र, 4 नवम्बर 2013
8. डा. अमित शर्मा सहायक प्रवक्ता संगीत विभाग, चैधरी देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा से दिनांक 20 अप्रैल 2022 को फोन पर हुई वार्ता के आधार पर संकलित।